# ।। सत्तगुरू पारख को अंग ।।
# मारवाडी + हिन्दी
# ( १–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

✻ बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुओ,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

## || अथ सत्तगुरू पारख को अंग लिखंते ||

|| साखी ||

**सत्त गुर सो सुखराम के || सांच झूठ दे छांट ||**
**उलट होय गढ पर चढे || सास सुरत मन सांट ||१||**

सच्चा सुखदेवाल परमात्मा कौन है,झुठा सुख बतानेवाली व काल के मुखमे डालनेवाली झुठी माया कौन है,यह जो छाट छाट कर समजाते है वे सतगुरु है । जो संत बंकनाल के रास्ते से उलटकर दसवेद्वार के गढपर चढकर दसवेद्वार के गढपे बैठे है व जिनकी सुरत,मन व साँस एक जीव हो गई है वे सतगुरु है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । जो बंकनाल के रास्ते से गढपर चढे नही है एवम् जिसकी सुरत,मन व साँस एक जीव हुए नही है वे सतगुरु नही है वे जगतके मनुष्यो के बराबर ही है ।।।१।।

**साहेब बिन माने नही || ना काऊ सूं बेर ||**
**सो सत्त गुर सुखराम के || पुता त्रुगटी सेर ||२||**

जो संत साहेब के सिवा ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति,पारब्रम्ह को मानते नही एवम् उनसे बेर भी रखते नही वे संत सतगुरु है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले जो संत त्रिगुटी शहर मे पहुँचे है वे ही सतगुरु है यह समजो ।।।२।।

**त्रबेणी न्हावे सदा || आठ पोर रहे ध्यान ||**
**सो सतगुर सुखराम के || अणभे पूरण ग्यान ||३||**

जो संत त्रिगुटी मे गंगा,यमुना,सरस्वती मे सदा नहाते है तथा जिनका आठोपोहोर त्रिगुटी मे ध्यान रहता है व जो बकंनाल के रास्तेका अनुभव लेकर पुर्ण ज्ञान बोलते है वेही सतगुरु है यह समजो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।३।।

**आसा, त्रस्ना, कल्पना || कर करमा को नास ||**
**सो सत्तगुर सुखराम के || छाडयो पूरब बास ||४||**

जिस संत की माया के सुखो की आशा व तृष्णा मिट गई है व साथ मे माया के सुखो की मनमे कल्पना भी उठती नही है व माया के सुखो के आशा,तृष्णा एवम् कल्पना के कर्मोका नाश किया है वे ही सतगुरु है ऐसा समजो । जिस संत ने पुर्व याने भृगुटी का निवास याने जन्म मरणेके गतीमे आनेका निवास सदा के लिए त्यागा है वे ही संत सतगुरु है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।४।।

**प्रमेसर सुं रत सदा || भूला सबे विकार ||**
**सो सत्तगर सुखराम के || पूथा दसवें द्वार ||५||**

जो संत परमेश्वर पे सदा अवलंबित रहते है व दुसरे सभी विकार याने ब्रम्हा,विष्णु ,महादेव, शक्ति,अवतारादिक की सेवा,पुजा,तिर्थ,व्रत,योग,यज्ञ आदि भूल गए है व दसवेद्वार पहुँच गए है वे ही सतगुरु है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।५।।

दरसण करे हे दीन का ।। ईण काया के माय ।।
सो सत्तगुर सुख राम के ।। दूजा कहिये नाय ।।६।।

जो संत सतस्वरुप परमात्मा को अपनी काया मे सदा देखते है वे ही सतगुरु है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। जो संत सतस्वरुप परमात्मा को अपनी काया मे जरासा भी कभी नही देखते वे सतगुरु नही है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।६।।

वे जन जुग कूं तारसी ।। ज्यारे अणभे प्रवाना हात ।।
वे सतगुर सुखराम के ।। सब बातन की बात ।।७।।

जिस संत ने अणभय देश से जीव तारनेका परवाना लाया है वे ही जुग को तारेंगे दुजे कोई भी संत जीव को तार नही सकेंगे । इसलिए अणभय देशसे जीव तारनेका औदा लाया है वे ही सतगुरु है,दुजे गुरु एक भी सतगुरु नही है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।७।।

जांकू हरि दूवो दियो ।। से जन त्यारे जीव ।।
वां बिन हर सिंवरण करो ।। प्रथन मिलसी पीव ।।८।।

जिस संत को हरी से जीव तारने की आज्ञा मिली है वे ही संत जीव को तारेंगे । उस संत का शरणा छोड्कर अन्य किसी संत का शरणा लेकर रातदिन रामजी के नाम का स्मरण किया  तो भी उसे मालिक नही मिलेगा ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने जताया ।।।८।।

फळ पावे पदवी मिले ।। गरभ न छुटे कोय ।।
दुवा बिना बोहो साधरे ।। ज्या संग मोख न होय ।।९।।

दुजे संतोके साथ बैकुंठ तक पदवी मिलेगी परन्तु संतोके शरणामे गए हुए उस जीव का गर्भ कभी नही छुटेगा । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले इसप्रकार बैकुंठतक पदवी देनेवाले जगत मे अनेक संत है परन्तु उनके साथ काल से मोक्ष नही मिलता । उनके पास जिव तारनेका ओहदा नही है ।।।९।।

सुणज्यो सब साची कंहु ।। इणमे फेर न सार ।।
भजन किया हीं तारसी ।। साचा जन की लार ।।१०।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,मै सत्य कहता हुँ उसमे उलटा सुलटा जरासा भी अंतर नही पकडो । जीव भजन करनेपे असली संत के शरण से तिरेगा । भजन करने पे भी नकली याने काल के मुख मे बैठे हुए संतोके पिछे एक भी जीव नही तीरेगा ।।।१०।।

साचा सत्त गुरू संतवे ।। उलट चडे आकास ।।
जन सुखिया अणभे घणी ।। ध्यान त्रगुटी बास ।।११।।

सच्चे सतगुरु सच्चे संत वे है जो बकंनालके रास्ते से उलटकर आकाश याने त्रिगुटी पहुँचे है । जिन्हे उलटकर आकाश चढनेका पुर्ण अनुभव है व जिनका ध्यान त्रिगुटी मे लगा है तथा जो त्रिगुटी मे निवास कर रहे है वे ही सच्चे सतगुरु,सच्चे संत है अन्य सभी झुठे सतगुरु झुठे संत है ।।।११।।

**दरगा सूं ले आविया ।। सतगुर पदवी संत ।।**
**वे तारे सुखराम के ।। जुग मे जीव अनंत ।।१२।।**

जो संत,जो सतगुरु परमात्माके दरगासे जीव कालसे मुक्त करनेकी पदवी लाते है वे ही सतगुरु जगतमे अनंत जीव कालसे मुक्त करते है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।१२।।

**अणभे की परवानगी ।। दीनी सिरजन हार ।।**
**वे सत्तगुर सुखराम के ।। तिरबो वां की लार ।।१३।।**

अणभय देश मे जीवोको पहुँचाने की परवानगी जिस सतगुरु को सिरजणहार परमात्माने याने जिवो को सृष्टीमे जन्म दिया है उस सिरजनहार परमात्माने दी है उस सतगुरु के साथ ही जीवोका तिरना होता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहा ।।।१३।।

**अमराव वकिल रे ।। हाकम बगसी दिवाण ।।**
**सब ओधां सुखराम के ।। नरपत की फुरमाण ।।१४।।**

राजा प्रजा मे से किसी को उमराव की पदवी देता है,किसको वकील बनाता है,किसको दिवाण बनाता है इसप्रकार के ओहदे अलग अलग मनुष्यको राजा देता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।१४।।

**ब्रम्हा सिरज्यो रचन कूं ।। बिस्न करण प्रत पाळ ।।**
**सिव कूं रच्यो संघार कूं ।। इंद्र बरसण मेघ माळ ।।१५।।**

इसीप्रकार सिरजनहार परमात्माने ब्रम्हा को सृष्टी रचना का ओहदा दिया,विष्णु को सृष्टी मे जन्मे हुए जीवोका प्रतीपाल करनेका ओहदा दिया तो शिव को जीवोका संहार करनेका ओहदा दिया व इंद्र को जलवर्षा करनेका ओहदा दिया । इन किसीको भी जीव काल से मुक्त करनेका ओहदा नही दिया ।।।१५।।

**पाप पुन्न का न्याव कूं ।। सिरज्यो हे जमराज ।।**
**संत सिरज्या सुखराम के ।। जीव उधारण काज ।।१६।।**

ऐसेही पाप व पुण्य का न्याय करने का जमराज को ओहदा दिया मतलब ब्रम्हा,विष्णु , महादेव,इंद्र,जमराज इनको किसी को भी जीव तारनेका ओहदा नही दिया । जो जीव परमात्माने पैदा किए उनको परमात्माके पद पहुँचाने का ओहदा सिर्फ बंकनालसे त्रिगुटी चढे हुए संत को दिया । इसलिए ब्रम्हा,विष्णु,महादेव आदि सतगुरु नही है । सतगुरु सिर्फ बंकनाल से त्रिगुटी पहुँचे वे संत है ।।।१६।।

कोई नाव कोई डूंडका ।। कोई सत्तगुर ज्यूं जहाज ।।
सब तारे सुखराम के ।। भव सागर महाराज ।।१७।।

सागर से तिरने के लिए डुंड्का याने एकदम छोटी नैय्या,थोडी बडी नैय्या व जहाज(एकदम बडी नैय्या)ऐसे अलग अलग प्रकारकी नैय्या रहती ऐसे ही भवसागर से तारने के लिए तीन प्रकारके संत रहते । कोई डुंड्का समान रहते कोई उससे बडी नैय्या समान रहते तो कोई उससे एकदम बडी नैय्या याने जहाज समान रहते । ये तीनो नैय्या जैसे सागर से जीव तारती वैसेही डुंड्का समान सतगुरु,मध्य नैय्या समान सतगुरु व जहाज समान सतगुरु ये तीनो भवसागर से जीव
तारते ।।।१७।।

नौका संग सो दोय सो ।। लाखाँ तारे जाझ ।।
जन सुखिया गुरू डूंडका ।। करो अपणो काज ।।१८।।

नौका समान सतगुरु रहते वे सौ दो सौ को तारते,जहाज समान सतगुरु रहते वे लाखो तारते,तो डुंड्का समान सतगुरु रहते वे सिर्फ अपना कार्य करते ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।१८।।

अे दोऊं भव तारसी ।। एक सत्तगुर अेक ज्हाज ।।
गुण ओगण देखे नही ।। बहे बिडद की लाज ।।१९।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले जहाज व जहाज समान सतगुरु ये दोनो तारते । मतलब जहाज सागरसे व सतगुरु भवसागरसे जीवोको तारते । ये दोनो भी तारते वक्त जीवोका गुण व अवगुण नही देखते । ये जहाज व जहाज रुपी सतगुरु अपने तारणेकी बिड्द याने धर्म के लाजसे चलते ।।।१९।।

क्या सुखरत मुर्दे किया ।। मिली संजीवन आय ।।
सुखिया जे जीवे नही ।। तो बिडद जडीको जाय ।।२०।।

सतगुरु का बिड्द कैसे रहता इसका एक सामान्य दाखला दिया । जैसे एक मुर्दा नदीमे बहते हुए जा रहा था । उसने पहले का कोई भी सुकृत ऐसा नही किया था की उसे मृत्यु पश्चात संजीवनी बुटी मिलेगी व वह मुर्दा जिवीत हो जायेगा । वह मुर्दा बुटीको जानता भी नही था परन्तु पानी मे एक तरफसे संजीवनी बुटी बहते आयी और मुर्देके मुख मे पड गई व मुर्दा जिवीत हो गया । अब जडी मुर्देके मुखमे पड्ने के पश्चात भी मुर्दा जीवीत नही होता तो उस संजीवनी बुटी को संजीवनी बुटी कोई नही कहेगा,उसे जंगल की साधारण बुटी कहेंगे । इसीप्रकार संत सतगुरु नर नारी को मिले व उस नर नारी का तिरना नही हुआ तो उस संत को सिरजनहार परमात्मा से मिले ओहदेवाला कोई नही कहेंगे । इसलिए ये संत अपने ब्रिदका बिचार करके मिले हुए नर नारी को भवसागरसे तारते ।।।२०।।

पारस परस्यां गुण काहा ।। लोहा कंचन न होय ।।

पाहण सम सुखराम क्हे ।। पारस कहे न कोय ।।२१।।

जैसे लोहे को यदी पारस लग गया और उस लोहे का यदी सोना नही बना । तो उसे पारस कौन कहेगा । उसे दूसरे पत्थर के जैसा समझकर,कोई उसे पारस नही कहेगा । (वैसे ही कोई जीव,संत से मिला और उसका उद्धार नही हुआ । तो उस संत को संत कौन कहेगा । दूसरे अन्य संसार के मनुष्य के जैसा मनुष्य ही कहेंगे । पारस पत्थर यह जड है और लोहा यह भी जड है । जड से जड का रूपान्तर होता है । तो चैतन्य संत से,चैतन्य जीव का क्यों नही उद्धार होगा ?) ।। २१ ।।

निज नाव सिष मे जगे ।। काग पलट हुवे हंस ।।

वे सत्तगुर सुखराम केहे ।। पार ब्रम्ह को अंस ।।२२।।

उस संत से शिष्य मिलते ही,उस शिष्य में जो संत में नाम है वही नाम शिष्य में जागृत हो जाएगा और शिष्य की कौए की बुद्धी पलटकर हंसकी हो जाएगी । वैसे ही कौए से हंस करने वाले जो सतगुरू है,वे सतस्वरुप पारब्रम्ह के अंश है । ।। २२ ।।

नीर क्षिर निर्णा करे ।। वे साचा गुर पीर ।।

हंसा कूँ सुखराम क्हे ।। नाव चुगावे हीर ।।२३।।

जैसे हंस पंछी पानी व दुध का निर्णय करना समजता वैसेही सच्चे गुरु माया व सतस्वरुप परमात्मा का निर्णय समजते व वह निर्णय को भांती भांती से हंसोको समजाते व उन हंसोको रामनाम के हिरे चुगाते ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।२३।।

सुखिया संत छाया पडे ।। जम पुरी मे आय ।।

जीवां की ज्वाला बुझे ।। क्रोध जमाका जाय ।।२४।।

ऐसे संत की यमपुरी मे छाया भी पड गई तो उस छायाके योग से,वहाँ नर्कवास भोगते हुए जीव की तपन शांत होती और यमदुत का क्रोध नही के जैसा हो जाता । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।२४।।

जम जालम की त्रास सूं ।। हंसा करे पुकार ।।

सुखिया साहेब आविया ।। ले जन को अवतार ।।२५।।

यह यम बहुत जालिम है । उस यम के त्रास से जीव साहबसे पुकार करते है । तब साहेब संत का अवतार लेकर,जीव का उध्दार करने के लिए संसार मे आते है ।।।२५।।

।। इति सतगुरू पारख को अंग संपूरण ।।